Paper - I
Deg. T H
module - 1

18.5.2020 — S. S. Haider

Role of Price Mechanism

एक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में केन्द्रीय समस्याओं का समाधान कीमत तंत्र की सहायता से किया जाता है। कीमत तंत्र के द्वारा समस्त वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतें बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के मांग तथा पूर्ति के द्वारा निर्धारित होती है, संक्षेप में कीमतों के एक समूह को कीमत तंत्र कहते हैं।

वस्तु का क्रय-विक्रय वस्तु बाजार में होता है। वस्तुओं की ही तरह सेवाओं का भी क्रय विक्रय किया जाता है। उत्पादन सेवाओं की मांग उपक्रमी द्वारा की जाती है जबकि इनकी पूर्ति गृहस्थों द्वारा की जाती है सेवाओं का क्रय विक्रय साधन बाजार में किया जाता है। अतः वस्तु बाजार तथा साधन बाजार दोनों ही जगह कीमत तंत्र की सहायता से वस्तु एवं सेवाओं का क्रय विक्रय किया जाता है। इस प्रकार क्रेताओं एवं विक्रेताओं में साधनों, वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग एवं पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों के सन्तुलन से जो मुद्रा की व्यवस्था बनती है उसे ही कीमत-तंत्र कहते हैं।

फर्गुसन के शब्दों में "कीमत तंत्र से अभिप्राय विभिन्न बाजारों में मांग और पूर्ति की अन्तर्क्रियाओं द्वारा वस्तुओं, सेवाओं तथा साधनों की कीमत निर्धारण करना है। कीमत वह राशि है जो किसी वस्तु या साधन की निश्चित मात्रा तथा गुणवत्ता को प्राप्त करने के लिए दी जाती है।"

कीमत तंत्र को समझने के लिए तीन बातें समझना आवश्यक है
(1) मांग का सिद्धान्त (2) पूर्ति का सिद्धान्त (3) साम्य कीमत का सिद्धान्त

(1) मांग का सिद्धान्त — अलग अलग कीमतों पर उपभोक्ताओं द्वारा वस्तु एवं सेवाओं की जितनी मात्रा को मांगा जाता है उसे मांग कहते हैं। सामान्य रूप से उपभोक्ता ऊंची कीमत पर कम तथा कम कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा की मांग करते हैं। इस तरह कीमत व वस्तु की मांग में विपरीत सम्बन्ध होता है।

(2) पूर्ति का सिद्धान्त — इससे आशय वस्तु व सेवा की उस मात्रा से है जिसे उत्पादक विभिन्न कीमतों पर बाजार में बेचने के लिए तत्पर हैं। सामान्य रूप से उत्पादक ऊंची कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा की पूर्ति करना चाहता है और कम कीमत पर कम वस्तु की पूर्ति। इस प्रकार वस्तु की कीमत तथा पूर्ति में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है यही पूर्ति का नियम है।

(3) साम्य कीमत का सिद्धान्त — साम्य की अवस्था में वस्तु की मांग वस्तु की पूर्ति के बराबर होती है तथा इस बिन्दु पर जो कीमत निर्धारित होती है उसे साम्य कीमत कहते हैं। उपभोक्ता कम कीमत पर वस्तु की अधिक और ज्यादा कीमत पर कम मांग करते हैं। इसके विपरीत उत्पादक कम कीमत पर वस्तु की कम आपूर्ति करते हैं और अधिक कीमत पर अधिक वस्तु की आपूर्ति करते हैं। जिस कीमत पर वस्तु की मांग इसकी पूर्ति के समान होती है उसे साम्य कीमत कहते हैं। अर्थात साम्य कीमत वह कीमत है जिस पर उत्पादक वस्तु की पूर्ति देने को तैयार है और उपभोक्ता वस्तु खरीदने को तैयार है।

Scanned with CamScanner

18.5.2020 ✓

मांग वक्र और पूर्ति वक्र की सहायता से कीमत निर्धारण को एक चित्र के द्वारा बताया गया है। चित्र में मांग वक्र DD एवं पूर्ति वक्र SS है। दोनों एक दूसरे को E बिन्दु पर काटते हैं। इसको ही साम्य बिन्दु कहते हैं। चित्र से स्पष्ट है कि EQ साम्य कीमत है जिस पर वस्तु की OQ मात्रा की उपभोक्ताओं द्वारा मांग और उत्पादक द्वारा पूर्ति की जाती है।

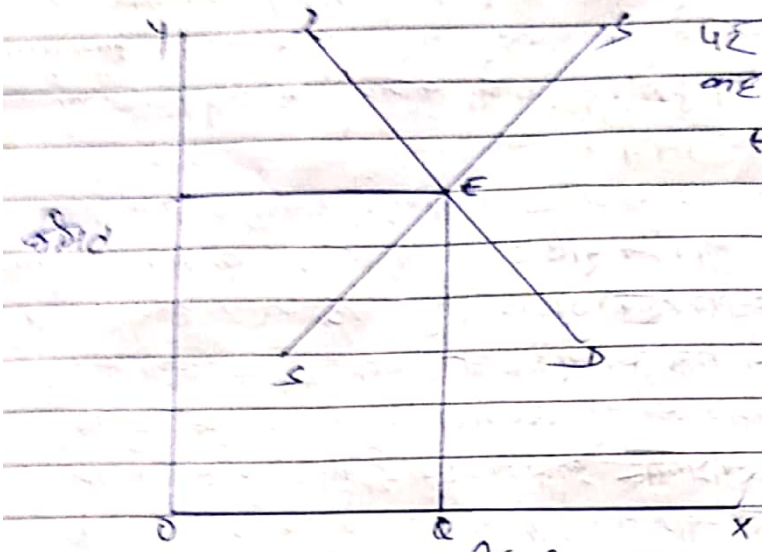

मांग एवं पूर्ति की मात्रा

विशेषताएं — कीमत यन्त्र की प्रक्रिया एक स्वतः प्रक्रिया है जिसमें दो प्रतियोगी शक्तियों की क्रिया से साम्य कीमत का निर्धारण होता है। कीमत यन्त्र की मुख्य विशेषताएं निम्न हैं।

① सामूहिक परिणाम — कीमतों के एक समूह को कीमत तन्त्र या कीमत प्रणाली कहते हैं। कीमत तन्त्र द्वारा जिस कीमत का निर्धारण होता है उसे बाजार कीमत कहते हैं। यह बाजार कीमत अनेक क्रेताओं तथा विक्रेताओं के परस्पर स्वतन्त्र निर्णयों एवं क्रियाओं का सामूहिक परिणाम होता है। अर्थात कोई भी अकेला क्रेता या विक्रेता बाजार की प्रचलित कीमतों को प्रभावित नहीं कर सकता है।

② आधारभूत तत्व — कीमत यन्त्र के चार आधारभूत तत्व हैं (i) बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता होती है (ii) बाजार में अनेक क्रेता एवं विक्रेता होते हैं (iii) क्रय विक्रय में मुद्रा का प्रयोग होता है (iv) अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में पूर्ण स्वतंत्रता रहती है। इन तत्वों के अभाव में कीमत प्रणाली की कल्पना निरर्थक लगती है।

③ स्वतंत्र आर्थिक निर्णयों से स्वचालित — कीमत प्रणाली व्यक्तियों के स्वतंत्र आर्थिक निर्णयों से स्वचालित रहती है। निर्णय में सामंजस्य के लिए किसी प्रकार के सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं पड़ती।

④ आवंटन कार्य — कीमत प्रणाली आर्थिक संगठन में मांग एवं पूर्ति की शक्तियों में परिवर्तन के द्वारा साधनों, वस्तुओं और संगठन में आवंटन का कार्य करती है। जिन वस्तुओं की मांग घटती है उनकी कीमतें प्रायः गिरती हैं और मांग बढ़ने पर कीमतें बढ़ती हैं। जबकि पूर्ति पक्ष में पूर्ति बढ़ने पर कीमतें प्रायः घटती हैं इत्यादि। अतः साधनों के आवंटन कम कीमत वाली वस्तुओं के क्षेत्रों से हटाकर अधिक कीमत वाली वस्तुओं के क्षेत्र में होता है।

Scanned with CamScanner